Funding: Tattva Heritage Foundation,Kolkata. Digitization: eGangotri.

BIS

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

संस्कृत महाविद्यालय

धर्म विज्ञान एवं प्राच्य विद्या विभाग

प्रवेशिका, मध्यमा, शास्त्री एवं आचार्य परीक्षाओं

की

नियमावली

एवं

पाठ्यग्रन्थावली

१९६२

CC-0. Bhagavad Ramanuja National Research Institute, Melukote Collection.

Funding: Tattva Heritage Foundation,Kolkata. Digitization: eGangotri.

CC-0. Bhagavad Ramanuja National Research Institute, Melukote Collection.

Funding: Tattva Heritage Foundation,Kolkata. Digitization: eGangotri.

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

संस्कृत महाविद्यालय

धर्म विज्ञान एवं प्राच्य विद्या विभाग

प्रवेशिका, मध्यमा, शास्त्री एवं आचार्य परीक्षाओं

की

नियमावली

एवं

पाठ्यग्रन्थावली

१९६२

CC-0. Bhagavad Ramanuja National Research Institute, Melukote Collection.

Funding: Tattva Heritage Foundation,Kolkata. Digitization: eGangotri.

CC-0. Bhagavad Ramanuja National Research Institute, Melukote Collection.

Funding: Tattva Heritage Foundation,Kolkata. Digitization: eGangotri.

अनिवार्य एन० सी० सी० प्रशिक्षण

१. प्रवेश के अन्य अध्यादेशों के अतिरिक्त प्रत्येक स्नातकीय (छात्र एवं छात्राएं) जो प्रथम बार विश्वविद्यालय अधिकृत विद्यालयों में प्रवेश ले रहे हैं (क) 2nd U.P.Bn. N.C.C. या (ख) N.C.C. Rifles (Boys) ; (ग) N.C.C. Rifles (Girls) या (घ) 6th U.P. Girls' Sub troop या (ङ) E.M.E. Section of N.C.C. (Students of Engg., Mining & Met. only) या किसी अन्य एन० सी० सी० यूनिट में जो भविष्य में चले, प्रशिक्षण लेना अनिवार्य होगा। छात्र एवं छात्राओं को एक लिखित प्रपत्र अपने अभिभावकों द्वारा प्रमाणित कराके अपने प्रवेशपत्र के साथ संलग्न करना होगा कि वे उक्त एन० सी० सी० प्रशिक्षण पाने को तैयार हैं। यदि प्रवेशपत्र के साथ इस प्रकार का प्रपत्र संलग्न नहीं होगा तो विद्यालयों के प्रधानाचार्य उस प्रवेशपत्र को विलोपित कर देंगे।

२. विद्वत परिषद् की स्थाई समिति निम्न छात्रों को उक्त अनिवार्य एन० सी० सी० प्रशिक्षण से मुक्ति दे देगी।

(क) जो छात्र विश्वविद्यालय की विविध परीक्षाओं के पाठ्यक्रम के अनुसार भौतिक प्रशिक्षण के अन्तर्गत एन० सी० सी० प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हों।

(ख) जो छात्र अपनी यूनिट से प्रशिक्षण के अयोग्य घोषित कर दिये गये हों।

(ग) जो छात्र विद्वत परिषद् की स्थाई समिति से नियुक्त मेडिकल बोर्ड द्वारा उक्त प्रशिक्षण के लिए शरीर से अयोग्य होंगे।

३. प्रत्येक विद्यालय के प्रधानाचार्य ऐसे छात्रों की जो उक्त प्रशिक्षण से मुक्ति चाहते हैं एक सूची अपने प्रतिवेदन तथा सम्बन्धित प्रलेखों के साथ विद्वत परिषद् की स्थाई समिति के विचारार्थ कुलसचिव महोदय को भेजेंगे।

CC-0. Bhagavad Ramanuja National Research Institute, Melukote Collection.

Funding: Tattva Heritage Foundation,Kolkata. Digitization: eGangotri.

सामयिक परीक्षायें

प्रवेश के अन्य अध्यादेशों के अतिरिक्त प्रथम उपाधि परीक्षा के लिए, कला, विज्ञान तथा टेकनोलाजी विभाग के छात्रों को छोड़कर प्रत्येक छात्र को सामयिक एवं सत्रिक परीक्षाओं में सम्मिलित होना होगा। तिथि तथा समय प्रधानाचार्य नियत करेंगे। प्रत्येक परीक्षा ५० पूर्णांक की होगी। प्रत्येक कक्षा में ऐसी परीक्षा दो बार होगी। प्राप्तांकों को विश्वविद्यालयी परीक्षांकों में सम्मिलित किया जायगा। इससे परीक्षार्थी अपनी श्रेणी सुधार सकेगा। इन परीक्षाओं में अनुत्तीर्ण होना विश्वविद्यालयी परीक्षाफल की श्रेणी पर कोई प्रभाव नहीं डालेगा।

इन परीक्षाओं का कार्यक्रम एवं पद्धति का निरूपण प्रधानाचार्य करेंगे। और परीक्षार्थियों को कम से परीक्षा से एक सप्ताह पूर्व इसकी सूचना देंगे।

CC-0. Bhagavad Ramanuja National Research Institute, Melukote Collection.

Funding: Tattva Heritage Foundation,Kolkata. Digitization: eGangotri.

COMPULSORY N.C.C. TRAINING

1. Notwithstanding anything to the contrary in the Ordinances governing various courses of study in the University, all under graduate students (boys and girls) who join the constituent colleges of the University for the first time, shall undergo compulsory training in (a) 2nd U.P. Bn. N.C.C. or (*b*) N.C.C. rifles (boys) ; (*c*) N.C.C. rifles (Girls) or (*d*) 6th U.P. Girls' sub-troop or (*e*) E.M.E. section of N.C.C. (students of the colleges of Engineering and Mining and Metallurgy only) or any other unit that may be started in future and shall as a condition of their admission give a written under-taking duly endorsed by the parents or guardian along with their application form for admission that they shall undergo the compulsory training in one of the units mentioned above. The application form of admission shall be rejected by the respective Principals of Colleges if such an undertaking on the prescribed form is not enclosed with the Application Form for admission.

2. Exemption from the compulsory training provided in the above clause shall be given by Standing Committee of the Academic Council to such candidates only who :

   (*a*) are receiving N.C.C. training as a part of the regular Physical training course prescribed for the various examinations by the University ;

CC-0. Bhagavad Ramanuja National Research Institute, Melukote Collection.

Funding: Tattva Heritage Foundation,Kolkata. Digitization: eGangotri.

(*b*) are declared unfit or otherwise unsuitable for training by the respective units; and

(*c*) are recommended by a Board of Medical Officers appointed by the Standing Committee of the Academic Council to be physically unfit to undergo the prescribed training.

3. Principals of respective Colleges shall submit to the Registrar a list of such students who seek exemption from the above training, within one month of the closing date of admission, along with their recommendation in each individual case duly supported by the relevant documents for consideration by the Standing Committee of the Academic Council.

———

CC-0. Bhagavad Ramanuja National Research Institute, Melukote Collection.

Funding: Tattva Heritage Foundation,Kolkata. Digitization: eGangotri.

"Notwithstanding anything to the contrary contained in the Ordinances governing the courses of study for the first degree examination under various Faculties of the University, other than the Faculties of Arts, Science and Technology, all regular candidates of the respective first degree course shall appear at the periodical tests and the sessionals on such dates and times as may be fixed by the Principals of the Colleges concerned. The examinations for sessionals and periodical tests shall each carry 50 marks. Two such tests shall be held in each class. The total marks obtained by the candidates shall be credited to the marks obtained at the respective University examinations and will be helpful to the candidates in improving their class or division. Failure to pass at these class tests or sessional examinations shall not affect in any way the results of the examination or the division or class otherwise secured by the candidates.

The programme for the class tests and sessional examinations and the manner in which they will be conducted shall be laid down by the respective Principals of Colleges and shall be intimated to the students at least one week before the dates and times of holding the above tests."

CC-0. Bhagavad Ramanuja National Research Institute, Melukote Collection.

Funding: Tattva Heritage Foundation,Kolkata. Digitization: eGangotri.

CC-0. Bhagavad Ramanuja National Research Institute, Melukote Collection.

Funding: Tattva Heritage Foundation,Kolkata. Digitization: eGangotri.

CHAPTER VI

॥ श्रीः ॥

काशीस्थहिन्दूविश्वविद्यालयीय-धर्मविज्ञान-प्राच्यविद्याविभागीयपरीक्षानियमाः ।

अध्यायः ३८

१—प्राच्यविद्याविभागविचारसमितिः (फेकल्टी) निजामार्थिकीमवस्थामनुसरन्ती यदा यदावश्यकतामनुभविष्यति तदा तदा विचारं प्रस्तावञ्च कर्तुमर्हत्यधो निर्दिष्टेषु विषयेषु :—

(क) प्राचीनभारतीयविद्या-विज्ञान-भाषाणामध्ययनाभिवृद्धिः, तदन्वेषणं, प्राचीनभारतीयादरणीयग्रन्थानां संरक्षणं च ।

(ख) भारतीयवर्तमानभाषाणामुन्नतिः तदध्ययनाभिवृद्धिश्च ।

(ग) प्राच्यविभिन्नभाषास्वन्वेषणादिकर्म, तदध्ययनाभिवृद्धिः, यत्र विषये विद्वत्परिषत् (एकेडेमिक कौन्सिल) यथासमयं यत् किञ्चित्प्रार्थयेत तदपि ।

विचारसमितिः इदानीम् (क), (ख) चिन्हितविषये एव स्वं कार्यमनुतिष्ठति ।

२—इमां विचारसमितिमाश्रिताश्चतस्रः परीक्षाः प्रतिवत्सरं भवेयुः ।

तद्यथा—

(१) प्रवेशिकापरीक्षा
(२) मध्यमापरीक्षा
(३) शास्त्रिपरीक्षा
(४) शास्त्राचार्यपरीक्षा

३—परीक्षा लेखेन, वाचा, उभाभ्यां वा भविष्यन्ति । यत्र यत्र विषये आवश्यकता तत्र तत्र क्रियात्मकपरीक्षाऽपि भविष्यति ।

CC-0. Bhagavad Ramanuja National Research Institute, Melukote Collection.

Funding: Tattva Heritage Foundation,Kolkata. Digitization: eGangotri.

सर्वासु परीक्षासु उत्तराणि संस्कृतभाषायां देवनागरीलिप्या लेखनीयानि ।

प्रवेशिका परीक्षा

४—प्रवेशिकापरीक्षा चत्वारिंशाध्यायीयैकविंशविधौ चतुर्दशाध्यायीयैकोनविंशविधौ च लिखितया रीत्यैव भविष्यति । अस्यां परीक्षायां चत्वारिंशाध्यायीयसप्तदशविधितः विंशतितमं चतुर्दशाध्यायस्य पञ्चदशविधितोऽष्टादशं यावद्यावन्तो विषयस्सन्ति तावद्विधिस्थप्रतिज्ञानुसारेणैव छात्राणां प्रवेशो भविष्यति ।

विश्वविद्यालयीयरणवीरसंस्कृतपाठशालायां नियमेनाधीतवन्तः, स्वतन्त्राश्च छात्राः परीक्षायामस्यां प्रवेशं लभेरन् । रणवीरसंस्कृतपाठशालायामधीतिनां कृते रजिस्ट्रारनिकटे शुल्केन सहाऽऽवेदनपत्रप्रेषणस्यान्तिमस्समयः परीक्षादिवसात् षड्भ्यः सप्ताहेभ्यः पूर्वः, स्वतन्त्राणां च अक्तूबरमासस्य प्रथमो दिवसः ।

५—प्रवेशिकापरीक्षेयमधोनिर्दिष्टेषु विषयेषु भविष्यति—

(१) संस्कृतम् ।
(२) हिन्दी, बंगला, गुजराती, मराठी, उड़िया, तामिल, तेलगू आस्वन्यतमा भाषा ।
(३) गणितम् ।
(४) इतिहासः, भूगोलश्च ।

अथवा

(३) व्याकरण-साहित्ये ।
(४) न्याये सामान्यज्ञानम् ।

ऐच्छिका विषयाः—

(१) अंग्रेजी (English)
(२) चित्रणम्, हस्तकौशलञ्च ।
(३) कृषिविद्या, क्षेत्रमापनञ्च ।

धर्मविज्ञानविभागः ।

अध्यायः ३९

१—विश्वविद्यालयीय-हिन्दूविद्यार्थिनां धर्मशिक्षा धर्मविज्ञानविभागाधीना, तत्सम्बन्धिन्यश्च परीक्षास्तदधीना भवेयुः ।

CC-0. Bhagavad Ramanuja National Research Institute, Melukote Collection.

Funding: Tattva Heritage Foundation,Kolkata. Digitization: eGangotri.

२—विभागेऽत्र प्रवेशं प्राप्नुवन्तश्छात्रा हिन्दवो भवेयुः ।

३—विभागेऽत्र पञ्चपरीक्षा भविष्यन्ति—

(१) मध्यमापरीक्षा
(२) वेदशास्त्रिपरीक्षा
(३) वेदाचार्यपरीक्षा
(४) स्मृतिरत्नपरीक्षा
(५) स्मृतिसागरपरीक्षा ।

४—परीक्षास्तावत्—लेखनपरीक्षाः, मौखिकपरीक्षाः, उभय्योपि वा, तथा तत्तद्विषयक-क्रियात्मकशिक्षापरीक्षाश्च भविष्यन्ति ।

मध्यमा परीक्षा

५—परीक्षेयं खण्डत्रयेण भवति । खण्डपरीक्षाश्च प्रतिवत्सरं काश्यां विचार-समित्या निर्धारिते काले स्थाने च भविष्यन्ति ।

मध्यमाप्रथमवर्षे तेषामेव प्रवेशाधिकारो भवेत् ये अधोनिर्दिष्टा-स्वन्यतमां परीक्षामुत्तीर्णाः—

(क) विश्वविद्यालयस्य प्रवेशिका
(ख) जयपुरस्य प्रवेशिका
(ग) काशीस्थ संस्कृतविश्वविद्यालयस्य प्रथमा
(घ) विहारसंस्कृतसमितेः प्रथमा
(ङ) पञ्जावप्रान्तस्य प्राज्ञपरीक्षा
(च) कलकत्तासंस्कृतसमितेर्मध्यमा
(छ) मद्रप्रान्तीया इन्ट्रेन्स्
(ज) संस्कृतभाषां द्वितीयतया गृहीत्वा यत्र क्वापि भवा मेट्रिकुलेशन् (एड्मिशन्)
(झ) आन्ध्रविश्वविद्यालयीया इन्ट्रेन्स

विश्वविद्यालयस्य संस्कृतमहाविद्यालये धर्मविज्ञान प्राच्यविद्या विभागे तदङ्गीकृतेऽन्यस्मिन्वा विद्यालये यथाविधि प्रवेशानन्तरं नियमेन संवत्सरमेकं अधीतवन्त एव छात्राः मध्यमा प्रथमखण्डपरीक्षां दातुमधिकृतां भवेयुः । मध्यमापरीक्षाप्रथमखण्डोत्तीर्णा वत्सरमेकं यथानियमं संस्कृतमहाविद्यालय विश्वविद्यालयाभ्युपगतविद्यालयान्तरे वा तदीयग्रन्थानधीत्य द्वितीयखण्ड-परीक्षादानेऽधिकारिणो भवेयुः । तथा द्वितीयखण्डोत्तीर्णा एव यथानिर्दिष्ट-विद्यालयेषु यथानियमं वर्षमेकमधीतिनः तृतीयखण्डपरीक्षाप्रदानेऽधिक्रियेरन् ।

CC-0. Bhagavad Ramanuja National Research Institute, Melukote Collection.

Funding: Tattva Heritage Foundation,Kolkata. Digitization: eGangotri.

७—परीक्षार्थिनः विचारसभया (Standing Committee of the Academic Council) निर्धारितप्रकारकमावेदनपत्रं यथावत्पूरयित्वा तत्तदधिकारिद्वारेण तथा प्रेषयेयुः यथेदं परीक्षादिवसात् षडभ्यः सप्ताहेभ्यः पूर्वं रजिस्ट्रारमहोदयसविधमधिगच्छेत् ।

८—मध्यमापरीक्षायां पञ्चसाधारणानि चत्वार्यसाधारणानि च पत्राणि स्युः ।

क—साधारणपत्राणि (१) संस्कृतसाहित्यम् तदितिहासश्च, (२) हिन्दी, (३) अनुवादः, (४) इतिहासो भूगोलो वा नागरिकशास्त्रञ्च, (५) हिन्दी, आंग्लभाषा वा ।

ख—असाधारणपत्राणि–प्रत्येकं चत्वारि पत्राणि विषयेष्वधो निर्दिष्टेषु भवन्ति—(१) व्याकरणम्, (२) साहित्यम्, (३) ज्यौतिषम्, (४) दर्शनम्, (५) वेदः ।

९—मध्यमाप्रथमखण्डपरीक्षायामेकस्मिन्विषयेऽनुत्तीर्णश्छात्रस्तदनन्तरवर्षे तस्मिन्नेव विषये परीक्षां दातुं शक्नुयात् । तत्र ३५ संख्यातोऽन्यूनानङ्कान्प्राप्योत्तीर्णो भवेत् । परं तस्य श्रेणिलाभो नैव स्यात् । न वा स पदकच्छात्रवृत्त्यादिकं प्राप्तुमधिकुर्यात् ।

१०—पूर्वोक्तनवमविधिविषयश्छात्र एकस्मिन्विषयेऽनुत्तीर्णोऽपि मध्यमाद्वितीयखण्डं प्रविश्य तत्राध्येतुम्, तस्मिन्नेव वत्सरे प्रथमखण्डानुत्तीर्णविषयेण साकं द्वितीयखण्डपरीक्षां च दातुमनुमन्येत । परन्तु स प्रथमखण्डानुत्तरणे द्वितीयखण्ड उत्तीर्णोऽपि तत्त्वेन न विज्ञायेत ।

११—पूर्वोक्तनवमदशमविधी मध्यमाद्वितीयखण्डछात्राणां कृतेऽप्यतिदिश्येयाताम् ।

शास्त्रिपरीक्षा

१२—शास्त्र्युपाधिपरीक्षां खण्डत्रयेण भवति । खण्डपरीक्षाश्च प्रतिसंवत्सरं काश्यां विचारसमित्या (Standing Committee of the Academic Council) निर्धारिते तिथौ समये च भवेयुः ।

शास्त्रिप्रथमखण्डकक्ष्यांप्रवेशाधिकारस्तु ये हिन्दू विश्वविद्यालयीयमध्यमापरीक्षाम्, काशीस्थ संस्कृत विश्वविद्यालयस्य मध्यमापरीक्षाम्, विहारसंस्कृतसमितिमध्यमापरीक्षाम्, पञ्जाबप्रान्तीय शास्त्रिपरीक्षाम्, मद्रास विश्वविद्यालयीयप्रिलिमिनरीपरीक्षाम्, जयपुरीयोपाध्यायपरीक्षाम्, कलिकातासंस्कृतसमितेस्तीर्थपरीक्षाम्, संस्कृतभाषायां बी० ए० परीक्षां

CC-0. Bhagavad Ramanuja National Research Institute, Melukote Collection.

Funding: Tattva Heritage Foundation,Kolkata. Digitization: eGangotri.

वोत्तीर्णास्तेषामेव भवेत्। पञ्जाबप्रान्तीयविशारदपरीक्षामुत्तीर्णास्तु केवलं साहित्यशास्त्रिकक्ष्यामेव प्रवेष्टुमनु मन्येरन्।

शास्त्रिप्रथमखण्डपरीक्षायां त एव प्रवेशमर्हन्ति ये विश्वविद्यालयीय-मध्यमापरीक्षां तत्समानामन्यां वा परीक्षामुत्तीर्य यथानियमं एतद्विश्व-विद्यालयीयसंस्कृतमहाविद्यालये विश्वविद्यालयाङ्गीकृतेऽन्यस्मिन्वा विद्यालये प्रवेशं लब्ध्वा संवत्सरमेकं नियमेनाधीयीरन्। शास्त्रिद्वितीयतृतीयखण्ड-कक्ष्यापरीक्षयोस्तु त एव प्रवेशं लभेरन् ये पूर्वं पूर्वखण्डपरीक्षोत्तीर्णाः, ये च यथानियमं विश्वविद्यालयीयसंस्कृतमहाविद्यालये विश्वविद्यालयाङ्गीकृते विद्यालयान्तरे वा तत्तत्खण्डीयग्रन्थानधीतवन्तः।

१३—एतद्विश्वविद्यालयीयशास्त्रिपरीक्षां एकस्मिन्विषये उत्तीर्णा विषयान्तरे सम्पूर्णां शास्त्रिपरीक्षां समान एव वत्सरे विद्यालयेषु नियतमध्ययनं विनैव दातुमनुमन्येरन्। किन्तु तेषां विषये तत्तत्खण्डीयसाधारणपत्रेषु परीक्षा न भवेत्।

१४—परीक्षार्थिनः विचारसभया (Standing Committee of the Academic Council) निर्धारितमावेदनपत्रं यथावत्पूरयित्वा तत्तदधिकारिद्वारा तथा प्रेषयेयुः यथेदं परीक्षादिवसात् षडभ्यः सप्ताहेभ्यः पूर्वं रजिस्ट्रारमहोदय-सविधमधिगच्छेत्।

१५—शास्त्रिपरीक्षायां त्रीणि साधारणानि षडसाधारणानि च पत्राणि भवेयुः।

(क) साधारणपत्राणि—

(१) संस्कृतग्रंथ-तत्कर्तृचरितम् (२) वैदिक साहित्यम्, (३) व्युत्पत्तिप्रदर्शनम्।

(ख)—अधोनिर्दिष्टेषु विषयेषु प्रतिविषयं षडसाधारणपत्राणि भवेयुः

(१) साहित्यम्, (२) व्याकरणम्, (३) वेदान्तः, (४) सांख्य-योगपुराणेतिहासाः, (५) न्यायवैशेषिके, (६) ज्यौतिषम्, (७) बौद्धजैनदर्शने, (८) वेदः, (९) मीमांसा, (१०) धर्मशास्त्रम्।

(छात्राः स्वविषयेतिहासगवेषणयोः विशिष्टपरिज्ञानाः प्रतीक्ष्येरन्।)

वेदाचार्य-शास्त्राचार्यपरीक्षे

१६—'आचार्य' उपाधिपरीक्षा खण्डत्रयेण भवति। खण्डपरीक्षाश्च प्रति-संवत्सरं काश्यां विचारसमित्या निर्धारिते स्थाने काले च भवेयुः।

CC-0. Bhagavad Ramanuja National Research Institute, Melukote Collection.

Funding: Tattva Heritage Foundation,Kolkata. Digitization: eGangotri.

आचार्यप्रथमखण्डकक्ष्याप्रवेशाधिकारस्तु, ये हिन्दू विश्वविद्यालयीय-शास्त्रिपरीक्षाम्, वाराणसेयसंस्कृतविश्वविद्यालयीयाचार्यपरीक्षाम्, विहार-प्रान्तीयाचार्यपरीक्षाम्, मद्रासविश्वविद्यालयीयशिरोमणिपरीक्षाम्, आन्ध्र-विश्वविद्यालयीय विद्याप्रवीणपरीक्षां वोत्तीर्णास्तेषामेव। ते च विश्वविद्या-लयीयसंस्कृतमहाविद्यालये विश्वविद्यालयाङ्गीकृते विद्यालयान्तरे वा यथानियमं प्रवेशं लब्ध्वा वर्षमेकं तदीयग्रन्थानधीत्य प्रथमखण्डपरीक्षा-दानेऽधिक्रियेरन्।

द्वितीयतृतीयखण्डकक्ष्ययोस्त एव प्रवेशं लभेरन् ये पूर्वं पूर्वखण्ड-परीक्षोत्तीर्णाः, ते च यथानियमं अस्मिन्विश्वविद्यालयीयसंस्कृतमहाविद्यालये विश्वविद्यालयाङ्गीकृते विद्यालयान्तरे वा प्रवेशं लब्ध्वा तत्तत्खण्डीयग्रन्था-न्वर्षमेकमधीत्य तत्परीक्षायोरधिक्रियेरन्।

१७—एकस्मिन्विषये आचार्यपरीक्षामुत्तीर्णाः छात्राः एकेनैव वर्षेण विषयान्तरेषु आचार्यपरीक्षा विद्यालये नियतमध्ययनं विनैव दातुमधिकृता भवेयुः यदि ते तस्मिन्विषये शास्त्रिपरीक्षोत्तीर्णाः।

१८—आचार्योपाधिपरीक्षायामधोनिर्दिष्टा विषया भवेयुः। (१) साहित्यम्, (२) व्याकरणम्, (३) वेदान्तः, (४) न्यायवैशेषिके, (५) ज्यौतिषम् (क) गणितम् (ख) फलितम्, (६) सांख्ययोगपुराणेतिहासाः, (७) बौद्धदर्शनम्, (८) जैनदर्शनम्, (९) वेदः (१०) मीमांसा, (११) धर्मशास्त्रम्।

१९—यश्छात्रः प्राच्यविद्याविचारसमितेः धर्मविज्ञानविभागसमितेर्वा प्रवेशिकां मध्यमां शास्त्रिपरीक्षां वोत्तीर्णः स केवलं आंग्लभाषायां एड्मिशन इण्टरमिडियेट् बी० ए० परीक्षाः क्रमेण दातुमधिकृतो भवेत्। परन्तु केवलाङ्ग्लभाषायां एड्मिशन्परीक्षामुत्तीर्ण एव इन्टरमिडियेटपरीक्षायां प्रवेशं लभेत। एवं तादृशीमिण्टरमीडियेट परीक्षामुतीर्ण एव तादृश्यां बी०ए० परीक्षायां प्रवेशं लभेत। तत्तत्परीक्षासूत्तीर्णाश्छात्रा योग्यतापत्रं (प्रमाणपत्रं) प्राप्नुयुः।

सर्वासु परीक्षासु प्रतिप्रश्नपत्रं शतंपूर्णाङ्काः नियताः सन्ति। प्रवेशिका-मध्यमा-शास्त्रिपरीक्षासु प्रतिप्रश्नपत्रं त्रयस्त्रिंशदङ्काः आचार्यपरीक्षायां प्रतिप्रश्नपत्रं पञ्चचत्वारिंशदङ्का अवश्यं प्राप्याः अन्यथोत्तीर्णो न भवेत्।

परीक्षायामुत्तीर्णाश्छात्राः यदि प्रतिशतं षष्टितोऽन्यूनान अङ्कान् प्राप्नु-

CC-0. Bhagavad Ramanuja National Research Institute, Melukote Collection.

Funding: Tattva Heritage Foundation,Kolkata. Digitization: eGangotri.

मुस्तर्हि प्रथमां, यदि प्रतिशतं पञ्चचत्वारिंशत्संख्यातोऽन्यूनान् तर्हि द्वितीयाम्, अन्ये च तृतीयां श्रेणिं गता व्यपदिश्येरन् । आचार्य-परीक्षायां तृतीया श्रेणिर्नास्ति ।

प्रवेशिकापरीक्षायाः रूप्यकत्रयम्, मध्यमापरीक्षायाः प्रतिखण्डं रूप्यकत्रयम्, शास्त्रिपरीक्षायाः प्रतिखण्डं रूप्यकचतुष्टयम्, आचार्यपरीक्षायाश्च प्रतिखंडं रूप्यकपञ्चकम् परीक्षाशुल्कं भवति ।

१—एतद्विश्वविद्यालयीयशास्त्रिपरीक्षामुत्तीर्णाः बी० ए० कक्ष्यां प्रविश्य यथानियमं वत्सरद्वयं तदीयग्रन्थानधीत्य बी० ए० परीक्षाप्रदानेऽधिकृताः भवेयुः यदि ते इण्टरमिडियेट् कक्ष्यास्थाङ्गलभाषायामुत्तीर्णाः ।

२—शास्त्राचार्यपरीक्षां वेदाचार्यपरीक्षां वोत्तीर्णाः संस्कृतपालीहिन्दीविषयेष्वेकतममाश्रित्य एम०ए० कक्ष्याप्रवेशे यथानियमं विश्वविद्यालयीयांग्लविद्यालये वत्सरद्वयं तदीयग्रन्थानधीत्य एम० ए० परीक्षाप्रदाने च प्रभवेयुः । उत्तीर्णा विद्यार्थिनः एम० ए० उपाधिभाजो भवेयुः ।

३—विश्वविद्यालयीयाचार्यपरीक्षामुत्तीर्य ये राजकीयैरङ्गीकृते विद्यालये (हाईस्कूले संस्कृतपाठशालायां वा) नियमेन १८ अन्यूनान्मासानध्यापनं कुर्वन्ति ते आंग्लकॉलेजे अध्ययनं विनैव अध्यापकत्वेन स्वतंत्ररूपेण संस्कृते, हिन्दीभाषायां, पालीविषये वा एम०ए० परीक्षाप्रदाने अधिकृता भवेयुः ।

४—एतद्विश्वविद्यालयीयां संस्कृतभाषायां बी० ए० परीक्षामुत्तीर्णाः संस्कृतमहाविद्यालये शास्त्रिकक्ष्यां प्रविश्य यथा नियमं वर्षमेकं तदीयग्रन्थानधीत्य च शास्त्रिप्रथमखण्डपरीक्षा प्रदाने ततः क्रमेणोत्तरोत्तरकक्ष्याप्रवेशे परीक्षासु चाधिकृता भवेयुः ।

५—एतद्विश्वविद्यालयीयशास्त्रिपरीक्षामुत्तीर्य ये राजकीयैरङ्गीकृते विद्यालये १८ अन्यूनान्मासानध्यापयन्ति ते शास्त्रिपरीक्षोत्तरणकालात् वर्षत्रयानन्तरं आचार्यप्रथमखण्डपरीक्षादानाधिकृता भवेयुः ।

६—शास्त्राचार्यप्रथमखण्डपरीक्षां वेदाचार्यप्रथमखण्डपरीक्षां वोत्तीर्य राजकीयैरङ्गीकृते विद्यालये १८ अन्यूनान्मासानध्यापयन्ति ये ते प्रथमखण्डपरीक्षोत्तरणकालात् वर्षद्वयानन्तरं तत्तदाचार्यद्वितीयखण्डपरीक्षादानाधिकारिणो भवेयुः । अयं न्यायः आचार्य तृतीयखण्डपरीक्षायामप्यतिदिश्यते ।

७—एतद्विश्वविद्यालयीयसंस्कृत एम० ए० परीक्षामुत्तीर्णाः संस्कृतमहाविद्यालये शास्त्राचार्यप्रथमखण्डं वेदाचार्यप्रथमखण्डं वा प्रविश्य यथानियमं

CC-0. Bhagavad Ramanuja National Research Institute, Melukote Collection.

Funding: Tattva Heritage Foundation,Kolkata. Digitization: eGangotri.

वर्षमेकं तदीयग्रन्थानधीत्य तां परीक्षां दातुमधिकारिणो भवेयुः। तत्र तत्र चोत्तीर्णा द्वितीयतृतीयखण्डपरीक्षां च दातुमनुमन्येरन्।

स्मृतिरत्नोपाधिपरीक्षा

२०—धर्मविज्ञानविभागे स्मृतिरत्नोपाधिपरीक्षाऽपि भागत्रयेण भवति। तदीयं-नियमास्सर्वेऽपि वेदशास्त्रिपरीक्षावदेव बोध्याः।

२१—तदावेदनपत्रप्रेषणनियमादिकमपि तद्वदेव बोध्यम्।

२२—स्मृतिरत्नपरीक्षायामधो निर्दिष्टा विषया भवेयुः—

(१) वेदः स्वशाखीयो भाष्यषडङ्गसहितः,
(२) स्मृति गृह्यसूत्रम्, स्मार्ता मुख्या विषयाः।
(३) पुराणानीतिहासाश्च,
(४) षड्दर्शन मर्यादा,
(५) पूर्वमीमांसा (सविस्तरा),
(६) न्यायः (सविस्तरः),
(७) ऋग्वेदभाष्यभूमिका सायणीया,
(८) भगवद्गीता सव्याख्या,
(९) मिताक्षरा च।

स्मृतिसागरोपाधिपरीक्षा

२३—स्मृतिसागरोपाधिपरीक्षायाः वर्षविभागादिनियमा वेदाचार्य-परीक्षावदेव भवन्ति। स्मृतिरत्नपरीक्षोत्तीर्णानामेवात्राऽधिकारः।

२४—आवेदनपत्रप्रेषणादिनियमाश्च वेदाचार्य परीक्षावदेव।

२५—स्मृतिसागरपरीक्षायां स्मृतिरत्नपरीक्षानिर्दिष्टेषु एकादिनवान्तेषु बिषयेष्व-न्यतमो भवति।

२६—धर्मविज्ञानविभागीयमध्यमापरीक्षामुत्तीर्णश्छात्रः इण्टरमीडियेट्परीक्षायां केवलमाङ्गलभाषायाः परीक्षां दातुमर्हति। एवं वेदशास्त्रिपरीक्षां स्मृति-रत्नपरीक्षां वोत्तीर्णश्छात्रः B.A. परीक्षायां केवलाङ्ग्लभाषायाः परीक्षां दातुमधिकरोति। परन्तुकेवलमाङ्ग्लभाषायां एडमिशन परीक्षामुत्तीर्ण एव पूर्वोक्तयामिन्टरमीडियेट् परीक्षाया प्रवेशं लभेत। एवं तादृशीमिण्ट-रमीडियेट् परीक्षामुत्तीर्ण एव तादृश्यां B.A. परीक्षायां प्रवेशं लभेत।

CC-0. Bhagavad Ramanuja National Research Institute, Melukote Collection.

Funding: Tattva Heritage Foundation,Kolkata. Digitization: eGangotri.

अध्यायः ३९ (A)

१—धर्मविज्ञानविभागे चतुर्ष्वपि वेदेषु श्रौते (तत्तच्छाखानुसारेण) स्मार्ते पौराणिके च पौरोहित्यविषयेऽध्यापनं क्रियते परीक्षाश्च सम्पाद्यन्ते तेषु तेषु विषयेषु ।

२—तत्र पौरोहित्यविषये परीक्षाद्वयं भवति—

(क) प्रमाणपत्रपरीक्षा—पौरोहित्यरत्नमिति ।

(ख) उपाधिपरीक्षा—कर्मकाण्डशास्त्रीति ।

३—पौरोहित्यरत्नपरीक्षा कर्मकाण्डशास्त्रिपरीक्षा च शुक्लयजुर्वेद कृष्णयजुर्वेद च साम्प्रतं भवति ।

४—अत्र परीक्षा द्वयेऽपि उत्तराणि संस्कृतभाषायां देवनागरी लिप्यामेव लेखनीयानि ।

५—पूर्वनिर्दिष्टयोः परीक्षयोः अन्यतमां परीक्षां दातुकामः परीक्षार्थी परीक्षा-शुल्केन साकमावेदनपत्रं रजिस्ट्रारसविधे तथा प्रेषयेत् यथा तत्परीक्षारम्भ-दिनात् डभ्यः सप्ताहेभ्यः पूर्वं रजिस्ट्रारमहोदयहस्तं प्राप्नुयात् ।

१. पौरोहित्यरत्नपरीक्षा

६—पौरोहित्यरत्नपरीक्षा भागत्रयेण (खण्डत्रयेण) वाराणस्यां हिन्दू विश्व-विद्यालयविचारसमित्या निर्धारिते स्थले समये च भविष्यति ।

७—तत्र नव पत्राणि भवेयुः । एकैकस्य पत्रस्य शतं पूर्णाङ्काः । तत्र क्रियात्मकशिक्षापरीक्षा च प्रश्नपत्रद्वारा भवेत् ।

८—परीक्षेयं तेषामेव कृते भवेत् येऽस्मदीयधर्मशास्त्रानुसारेण पौरोहित्यकर्मणि लब्धाधिकारा भवेयुः अथ च विश्वविद्यालयीयप्रवेशिकापरीक्षां तत्समा-नामङ्गीकृतां परीक्षां वोत्तीर्य ततः वर्षमेकं यावत् धर्मविज्ञानविभागे एतदीयान्ग्रन्थान् अधीतवन्तश्च भवेयुः ।

९—परीक्षामिमामुत्तीर्णेभ्यः प्रमाणपत्रमेकं विश्वविद्यालयाध्यक्षैः निर्णीतरूपं दीयते । "पौरोहित्यरत्नम्" इत्युपाधिरपि तेभ्यो वितीर्येत ।

१०—एतत्परीक्षाफलं श्रेणित्रये विभज्यते । अत्र मौखिकी परीक्षा न भविष्यति ।

११—प्राच्यधर्मविज्ञानविभागयोः मध्यमाशास्त्र्याचार्यकक्षासु अधीयानाः छात्राः स्वस्वाध्ययनेन सह एतद्विषयिणीं शिक्षां प्राप्तुं स्वपरीक्षाभिः सह परीक्षा-मिमां दातुं चानुमन्येरन् ।

CC-0. Bhagavad Ramanuja National Research Institute, Melukote Collection.

Funding: Tattva Heritage Foundation,Kolkata. Digitization: eGangotri.

काशीहिन्दूविश्वविद्यालयसंस्कृतमहाविद्यालयीय-परीक्षाणां पाठ्यग्रन्थावलिः ।

प्रवेशिका

ग्रन्थाः	अङ्काः
प्रथमपत्रम्—रघुवंशस्य २—४ सर्गाः श्रुतबोधश्च ।	१००
अथवा	
ऋग्वेदे ऋक्संहितायाः प्रथमाष्टके १—४ अध्यायाः	
अथवा	
शुक्लयजुर्वेदे माध्यन्दिनसंहितायाः (रुद्राष्टाध्यायी)	
अथवा	
कृष्णयजुर्वेदे तैत्तिरीयसंहितायाः प्रथमकाण्डे १—४ प्रश्नाः	
अथवा	
सामवेदे पूर्वार्चिकस्य १—४ प्रपाठका :—	
द्वितीयपत्रम्—मूलरामायणम्, हितोपदेशे मित्रलाभश्च ।	१००
तृतीयपत्रम्—लघुकौमुद्याम् आदितः चुराद्यन्तो भागः ।	१००
चतुर्थपत्रम्—लघुकौमुद्यां स्त्रीप्रत्ययान्तो भागः ।	१००
पञ्चमपत्रम्—तर्कसंग्रहः ।	१००
षष्ठपत्रम्—अमरकोषस्य आदितः काण्डद्वयम्	१००
अथवा	
अनुवादः संस्कृतभाषातो हिन्दीभाषायां हिन्दीभाषातः संस्कृत-भाषायां च ।	
सप्तमपत्रम्—हिन्दी—हिन्दी पाठमाला पं० चन्द्रधर इस्सरकृत, भाषा-व्याकरण पं० चन्द्रमौलि शुक्ल कृत	१००
अष्टमपत्रम्—गणितम् (जोड़, वाकी, गुणन, भाग), होडाचक्रम् । लोअर प्राइमरी अरिथमेटिक, चन्द्रमौलि शुक्ल कृत	१००
अथवा	
भारतवर्ष का इतिहास भाग १–२ लौटूसिंह गौतम तथा लक्ष्मीनारायण माथुर कृत ।	

CC-0. Bhagavad Ramanuja National Research Institute, Melukote Collection.

Funding: Tattva Heritage Foundation,Kolkata. Digitization: eGangotri.

ग्रन्थाः अङ्काः

अथवा

भारतवर्ष का भूगोल भाग २ एम० एल० जैन कृत ।

ऐच्छिकपत्राणि—(१) आंग्लभाषा (English), (२) चित्रणं, हस्तकौशलञ्च (३) कृषिविद्या क्षेत्रमापनञ्च (एडमिशन परीक्षायां निर्दिष्टा ग्रन्थाः)

मध्यमा

साधारणपत्रम्

प्रथमवर्षे प्रथमपत्रम्—संस्कृतसाहित्यस्य साधारणेतिहासः ५०

संस्कृत साहित्य का इतिहास (पं० वलदेव उपाध्याय कृत)

दशकुमारचरिते पूर्वपीठिका च ५०

प्रथमवर्षे द्वितीयपत्रम्—हिन्दी—(अ) हिन्दी–निवन्ध–माला प्रथम भाग (श्यामसुन्दर दास, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी)

(ब) गद्यभारती (के. पी. मिश्र. और पी० एन० आचार्य रचित पाठ सं० १, २, ५, ६, २२ और २६ को छोड़कर)

(स) अच्छी हिन्दी (रामचन्द्र वर्मा कृत) १००

असाधारणपत्रम्

प्रथमवर्षे तृतीयपत्रम्—ऋग्वेदे—प्रथमाष्टकस्य प्रथमद्वितीयावध्यायौ सायणभाष्यसहितौ उपोद्घातवर्जम् १००

शुक्लयजुर्वेदे—शुक्लयजुर्वेदसंहितायाः आदितः पंचाध्यायाः महीधरभाष्यसहिताः १००

कृष्णयजुर्वेदे—तैत्तिरीयसंहितायाः प्रथमकाण्डे प्रथमद्वितीयौ प्रपाठकौ सायणभाष्यसहितौ १००

CC-0. Bhagavad Ramanuja National Research Institute, Melukote Collection.

Funding: Tattva Heritage Foundation,Kolkata. Digitization: eGangotri.

ग्रन्थाः	अङ्काः
सामवेदे—सामवेदसंहितायाः पूर्वार्चिकस्य चत्वारः प्रपाठकाः सायणभाष्यसहिताः, उपोद्घात-वर्जम्	१००
व्याकरणे—सिद्धान्तकौमुदी समासाश्रयान्ता	१००
साहित्ये—कुमारसंभवस्य आदितः पंच सर्गाः किरातार्जुनीयस्य आदितः पंच सर्गाः मेघदूतम् (एषु व्याकरणसंबन्धिनः प्रश्ना अपि भवेयुः)	१००
ज्यौतिषे—लीलावती	८०
अङ्कगणितम् (७३ उदाहरणान्तम्), फलितसंग्रहः—	२०
दर्शने—न्यायमुक्तावली संपूर्णा	१००

साधारणपत्रम्

द्वितीयवर्षे प्रथमपत्रम्—अनुवादः— १००

द्वितीयवर्षे द्वितीयपत्रम्—इतिहासः—भारतवर्ष का इतिहास (ईश्वरी प्रसाद कृत) ६०

नागरिक शास्त्र—हाई स्कूल नागरिक शास्त्र (के० एल्० वर्मा कृत) ४०

अथवा

भूगोलः—भारतवर्ष का भूगोल (रामनारायण मिश्र कृत) ६०

नागरिक शास्त्र—हाईस्कूल नागरिक शास्त्र (के० एल० वर्मा कृत) ४०

असाधारणपत्रम्

द्वितीयवर्षे तृतीयपत्रम्—ऋग्वेदे—आश्वलायनगृह्यसूत्रम् गर्गनारायण-वृत्तिसहितम् १००

शुक्लयजुर्वेदे—पारस्करगृह्यसूत्रम् हरिहरभाष्यसहितम् १००

CC-0. Bhagavad Ramanuja National Research Institute, Melukote Collection.

Funding: Tattva Heritage Foundation,Kolkata. Digitization: eGangotri.

ग्रन्थाः	अङ्काः
कृष्णयजुर्वेदे—आपस्तम्बगृह्यसूत्रम् अनाकुलासहितम्	१००
सामवेदे—गोभिलगृह्यसूत्रं खादिरगृह्यसूत्रं वा भाष्यसहितम्	१००
व्याकरणे—सिद्धान्तकौमुदी तद्धितप्रभृतिभ्वाद्यन्ता	१००
साहित्ये—मध्यकौमुदी	१००
अथवा	
भट्टिकाव्यम्	
ज्यौतिषे—बीजगणितम् (भास्करीयम्) (७०)	१००
रेखागणिते आदितः द्वावध्यायौ (३०)	
दर्शने—पञ्चलक्षणी माधुरी सांख्यतत्त्वकौमुदी च	१००

साधारणपत्रम्

तृतीयवर्षे प्रथमपत्रम्—मेट्रिकपरीक्षायाः आङ्ग्लभाषाग्रन्थाः

1. F. G. Pearce : Simple Models of Prose and Verse (O. U. P.)
2. English Grammar Part IV by Nesfield J.C.
3. Model Translation Part V by Pt. Seetaram Chaturvedi.

अथवा

भारतीयदेशभाषास्वन्यतमा ।

हिन्दी	१. गद्यमंजरी पं० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र कृता	
	२. पंचवटी श्री मैथिलीशरण गुप्त कृता	१००

असाधारणपत्रम्

ऋग्वेदे—तृतीयवर्षे द्वितीयपत्रम्—कुण्डसिद्धिः श्रौतसूत्रभाष्यभूमिका च (म० म० पं० विद्याधर जी गौडकृता)	१००
,, तृतीयपत्रम्—प्रथमाष्टकस्य ३–५ अध्यायाः सायण-भाष्यसहिताः	१००

CC-0. Bhagavad Ramanuja National Research Institute, Melukote Collection.

Funding: Tattva Heritage Foundation,Kolkata. Digitization: eGangotri.

	ग्रन्थाः	अङ्काः
शुक्लयजुर्वेदे–तृतीयवर्षे	द्वितीयपत्रम्—कुण्डसिद्धिः श्रौतसूत्रभाष्यभूमिका च(म०म० पं० विद्याधर जी गौडकृता)	१००
,,	तृतीयपत्रम्—शुक्लयजुः संहितायाः ६–१० अध्यायाः महीधरभाष्यसहिताः	१००
कृष्णयजुर्वेदे—,,	द्वितीयपत्रम्—कुण्डसिद्धिः श्रौतसूत्रभाष्यभूमिका च (म० म० पं० विद्याधर जी गौडकृता)	१००
,,	तृतीयपत्रम्—तैत्तिरीयसंहितायाः प्रथम काण्डस्य ३–५ प्रश्नाः सायणभाष्यसहिताः	१००
सामवेदे— ,,	द्वितीयपत्रम्—कुण्डसिद्धिः श्रौतसूत्रभाष्यभूमिका च (म० म० पं० विद्याधर जी गौडकृता)	१००
,,	तृतीयपत्रम्—सामवेदसंहिताया पूर्वार्चिकस्य, ५–६ प्रपाठकौ, आरण्यकम् उत्तरार्चिकस्य, १–२ अध्यायौ भाष्यसहितौ	१००
व्याकरणे— ,,	द्वितीयपत्रम्—सिद्धान्तकौमुदी अदादिप्रभृति कृदन्तान्ता	१००
,,	तृतीयपत्रम्—न्यायप्रदीपः	१००
साहित्ये— ,,	द्वितीयपत्रम्—वृत्तरत्नाकरः अभिज्ञानशाकुन्तलम् पंचरात्रम्, चन्द्रालोकः	१००
,,	तृतीयपत्रम्—न्यायप्रदीपः	१००
ज्यौतिषे— ,,	द्वितीयपत्रम्—ग्रहलाघवस्य सूर्यग्रहणान्तो भागः (६०) रेखागणितस्य तृतीयचतुर्थाध्यायौ (४०)	१००
ज्योतिषे—तृतीयवर्षे	तृतीयपत्रम्—ग्रहनक्षत्रादेराकाशीयज्ञानम्	६०
	हिन्दी बीजगणितम् पूर्वार्द्धम् (के० पी० वसुकृतम्)	४०
दर्शने— ,,	द्वितीयपत्रम्—सिद्धान्तलक्षणम् जागदीशीसहितम्, परीक्षामुखसूत्रम् चतुर्थपरिच्छेदान्तञ्च	१००
,,	तृतीयपत्रम्—मीमांसापरिभाषा, सिद्धान्तबिन्दुः, न्यायप्रवेशश्च	१००

CC-0. Bhagavad Ramanuja National Research Institute, Melukote Collection.

Funding: Tattva Heritage Foundation,Kolkata. Digitization: eGangotri.

ग्रन्थाः अङ्काः

शास्त्रि-परीक्षा

ऋग्वेदः

प्रथमवर्षे प्रथमपत्रम्—ऋग्वेदसंहितायाः सायणभाष्यसहितायाः द्वितीयाष्टकम् १००

,, द्वितीयपत्रम्—ऋग्वेदप्रातिशाख्यम् पिङ्गलच्छन्दसि वैदिकप्रकरणम् पाणिनिशिक्षा च १००

,, तृतीयपत्रम्—वैदिकसूक्तसंग्रहः, कठोपनिषत्, प्रस्थानभेदः मधुसूदनसरस्वतीप्रणीतः १००

द्वितीयवर्षे प्रथमपत्रम्—ऋग्वेदसंहितायाः सायणभाष्यसहितायाः तृतीयाष्टकम् १००

,, द्वितीयपत्रम्—ऐतरेयब्राह्मणस्य सायणभाष्यसहितस्याऽऽद्याः चतस्रस्रः पञ्चिकाः १००

,, तृतीयपत्रम्—चतुर्वेदभाष्यभूमिकासंग्रहः १००

तृतीयवर्षे प्रथमपत्रम्—आश्वलायनश्रौतसूत्रे सभाष्ये १—६ अध्यायाः। १००

,, द्वितीयपत्रम्—मीमांसान्यायप्रकाशः याज्ञवल्क्यस्मृतावाचाराध्यायश्च। १००

,, तृतीयपत्रम्—व्युत्पत्तिप्रदर्शनम्। (५०)
वैदिक वाङ्मयइतिहासः। (५०) १००

अत्रसहायकग्रन्थाः—आर्यविद्यासुधाकरः।
यज्ञतत्वप्रकाशः।
ऐतरेयालोचनम्।
निरुक्तालोचनम्।

शुक्लयजुर्वेदः

प्रथमवर्षे प्रथमपत्रम्—महीधरभाष्ययुतायाः शुक्लयजुःसंहितायाः ११—१९ अध्यायाः। १००

,, द्वितीयपत्रम्—शुक्लयजुः प्रातिशाख्यम्, पिङ्गलच्छन्दसि वैदिकप्रकरणम्, याज्ञवल्क्यशिक्षा च १००

,, तृतीयपत्रम्—ऋग्वेदवत् १००

CC-0. Bhagavad Ramanuja National Research Institute, Melukote Collection.

Funding: Tattva Heritage Foundation,Kolkata. Digitization: eGangotri.

ग्रन्थाः	अङ्काः
द्वितीयवर्षे प्रथमपत्रम्—शुक्लयजुः संहितायाः महीधरभाष्ययुतायाः २०-३० अध्यायाः ।	१००
,, द्वितीयपत्रम्—शतपथब्राह्मणे सभाष्ये प्रथमं काण्डम् ।	१००
,, तृतीयपत्रम्—चतुर्वेदभाष्यभूमिकासंग्रहः ।	१००
तृतीयवर्षे प्रथमपत्रम्—कर्कभाष्यसहितकात्यायनश्रौतसूत्रे १-६ अध्यायाः ।	१००
,, द्वितीयपत्रम्—मीमांसान्यायप्रकाशः याज्ञवल्क्यस्मृतावाचाराध्यायश्च ।	१००
,, तृतीयपत्रम्—ऋग्वेदवत्	१००

कृष्णयजुर्वेदः

प्रथमवर्षे प्रथमपत्रम्—तैत्तिरीयसंहितायाः सायणभाष्यसहितायाः प्रथमकाण्डे ६—८ प्रश्नाः ।	१००
,, द्वितीयपत्रम्—तैत्तिरीयप्रातिशाख्यम्, पिङ्गलच्छन्दसि वैदिकप्रकरणम् व्यासशिक्षा याज्ञवल्क्यशिक्षा वा ।	१००
,, तृतीयपत्रम्—ऋग्वेदवत्	१००
द्वितीयवर्षे प्रथमपत्रम्—सायणभाष्यसंहितायाः तैत्तिरीयसहितायाः तृतीयकाण्डे १—३ प्रश्नाः ।	१००
,, द्वितीयपत्रम्—तैत्तिरीयब्राह्मणप्रथमाष्टकस्य सायणभाष्यसहितस्य १—४ प्रश्नाः ।	१००
द्वितीयवर्षे तृतीयपत्रम्—चतुर्वेदभाष्यभूमिकासंग्रहः ।	१००
तृतीयवर्षे प्रथमपत्रम्—आपस्तम्बश्रौतसूत्रे रुद्रदत्तभाष्यसहिते १—७ प्रश्नाः	१००
तृतीयवर्षे द्वितीयपत्रम्—मीमांसान्यायप्रकाशः, याज्ञवल्क्यस्मृतावाचाराध्यायश्च ।	१००
,, तृतीयपत्रम्—ऋग्वेदवत् ।	१००

सामवेदः

प्रथमवर्षे प्रथमपत्रम्—उत्तरार्चिकस्य ३-६ अध्यायाः सायणभाष्यसहिताः ।	१००
,, द्वितीयपत्रम्—पुष्पसूत्रम्, अथवा ऋक्तन्त्रम्, पिङ्गलच्छन्दसि वैदिकप्रकरणम् नारदशिक्षा च ।	१००

CC-0. Bhagavad Ramanuja National Research Institute, Melukote Collection.

Funding: Tattva Heritage Foundation,Kolkata. Digitization: eGangotri.

ग्रन्थाः	अङ्काः
प्रथमवर्षे तृतीयपत्रम्—ऋग्वेदवत्	१००
द्वितीयवर्षे प्रथमपत्रम्—उत्तरार्चिकस्य सायणभाष्यसहितस्य ७–१२ अध्यायाः ।	१००
,, द्वितीयपत्रम्—ताण्ड्यमहाब्राह्मणस्य सभाष्यस्स १–५ प्रपाठकाः ।	१००
,, तृतीयपत्रम्—चतुर्वेदभाष्यभूमिकासंग्रहः ।	१००
तृतीयवर्षे प्रथमपत्रम्—लाट्यायनश्रौतसूत्रस्य सभाष्यस्य १–५ प्रपाठकाः ।	१००
,, द्वितीयपत्रम्—मीमांसान्यायप्रकाशः याज्ञवल्क्यस्मृतावाचाराध्यायश्च ।	१००
,, तृतीयपत्रम्—ऋग्वेदवत् ।	१००

मीमांसा

प्रथमवर्षे प्रथमपत्रम्—जैमिनीयन्यायमालायाः (सविस्तरायाः) १–३ अध्यायाः	१००
प्रथमवर्षे द्वितीयपत्रम्—मीमांसान्यायप्रकाशः ।	१००
,, तृतीयपत्रम्—तर्कपादं विना शास्त्रदीपिकायाः निर्वीतान्तोभागः ।	१००
द्वितीयवर्षे प्रथमपत्रम्—शास्त्रदीपिकायास्तृतीयाध्यायस्यावशिष्टो भागः ४–५–६ अध्यायाश्च ।	१००
,, द्वितीयपत्रम्—शास्त्रदीपिकायाः ७–१० अध्यायाः ।	१००
,, तृतीयपत्रम्—श्रीमद्भगवद्गीता श्रीधरीसहिता कठोपनिषच्च ।	१००
तृतीयवर्षे प्रथमपत्रम्—शास्त्रदीपिकायाः ११–१२ अध्यायौ । तौतातितमततिलके अध्यायद्वयं च ।	१००
,, द्वितीयपत्रम्—शावरभाष्यस्य १–२ अध्यायौ, भाट्टचिन्तामणेस्तर्कपादश्च ।	१००
अथवा	
शास्त्रदीपिकायास्तर्कपादश्च ।	१००
,, तृतीयपत्रम्—व्युत्पत्तिप्रदर्शनम् । (५०)	१००
स्वविषयकेतिहास समालोचना च । (५०)	

CC-0. Bhagavad Ramanuja National Research Institute, Melukote Collection.

Funding: Tattva Heritage Foundation,Kolkata. Digitization: eGangotri.

ग्रन्थाः	अङ्काः

धर्मशास्त्रम्

प्रथमवर्षे प्रथमपत्रम्—मनुस्मृतेः १–६ अध्यायाः ।	१००
,, द्वितीयपत्रम्—याज्ञवल्क्यस्मृतेराचाराध्यायः मीमांसापरिभाषा च ।	१००
,, तृतीयपत्रम्—मनुस्मृतेः ७–१२ अध्यायाः ।	१००
द्वितीयवर्षे प्रथमपत्रम्—पारस्करगृह्यसूत्रम् गौतमधर्मसूत्रम्, श्राद्धविवेकस्य १–२ परिच्छेदौ ।	१००
,, द्वितीयपत्रम्—निर्णयसिन्धोः १–२ परिच्छेदौ ।	१००
,, तृतीयपत्रम्—श्रीमद्भगवद्गीता श्रीधरीसहिता कठोपनिषच्च ।	१००
तृतीयवर्षे प्रथमपत्रम्—निर्णयसिन्धोस्तृतीयः परिच्छेदः ।	१००
,, द्वितीयपत्रम्—याज्ञवल्क्यस्मृतेः प्रायश्चित्ताध्यायः ।	१००
,, तृतीयपत्रम्—व्युत्पत्तिप्रदर्शनम् व्यवस्थालेखनं च । (५०)	१००
स्वविषयकेतिहासः समालोचना च (५०)	१००

व्याकरणम्

प्रथमवर्षे प्रथमपत्रम्—मनोरमा, अजन्तपुँलिंगान्ता	१००
,, द्वितीयवर्षे—निरुक्ते प्रथमकाण्डम् (५०) सिद्धान्तकौमुदी स्वरवैदिकप्रक्रिया (५०)	१००
,, तृतीयपत्रम्—स्वविषयक इतिहासः	१००
द्वितीयवर्षे प्रथमपत्रम्—परिभाषेन्दुशेखरः	१००
,, द्वितीयपत्रम्—वैयाकरणभूषणसारः	१००
,, तृतीयपत्रम्—चतुर्वेदभाष्यभूमिकासंग्रहः	१००
तृतीयवर्षे प्रथमपत्रम्—शब्देन्दुशेखरः अजन्तान्तः	१००
,, द्वितीयपत्रम्— ,, अव्ययीभावान्तः	१००
,, तृतीयपत्रम्—व्युत्पत्तिप्रदर्शनम्	१००

साहित्यम्

प्रथमवर्षे प्रथमपत्रम्—शिशुपालवधविक्रमाङ्कदेवचरितयोः आदितः सप्त सर्गाः	१००

CC-0. Bhagavad Ramanuja National Research Institute, Melukote Collection.

Funding: Tattva Heritage Foundation,Kolkata. Digitization: eGangotri.

ग्रन्थाः	अङ्काः
प्रथमवर्षे द्वितीयपत्रम्—उत्तररामचरितम्, मुद्राराक्षसम्, दशरूपकञ्च	१००
,, तृतीयपत्रम्—स्वविषयकेतिहासः	१००
द्वितीयवर्षे प्रथमपत्रम्—कादम्बरी पूर्वभागः	१००
,, द्वितीयपत्रम्—कौटिलीयम् अर्थशास्त्रम्, याज्ञवल्क्यस्मृतिर्व्यवहाराध्यायस्य मिताक्षरा च अथवा न्यायकुसुमाञ्जलिर्हरिदासव्याख्योपेतः सांख्यतत्त्वकौमुदी च।	१००
,, तृतीयपत्रम्—चतुर्वेदभाष्यभूमिकासंग्रहः	१००
तृतीयवर्षे प्रथमपत्रम्—काव्यप्रकाशः	१००
,, द्वितीयपत्रम्—नैषधीयचरितम् आदितः १४सर्गाः, एकोनविंशश्च।	१००
,, तृतीयपत्रम्—व्युत्पत्तिप्रदर्शनम्	१००

न्यायवैशेषिके

प्रथमवर्षे प्रथमपत्रम्—अवच्छेदकत्वनिरुक्तिः जागदीशी।	१००
,, द्वितीयपत्रम्—व्यधिकरणजागदीशी चक्रवर्त्तिलक्षणान्ता।	१००
,, तृतीयपत्रम्—वेदान्तपरिभाषा अथवा ब्रह्मसूत्रम् शांकरभाष्यसहितम् चतुःसूत्रीपर्यन्तम्। न्यायसूत्रवृत्तेः १, ५, अध्यायौ च।	१००
द्वितीयवर्षे प्रथमपत्रम्—पक्षता जागदीशी।	१००
,, द्वितीयपत्रम्—व्यधिकरणजागदीश्या अवशिष्टभागः।	१००
,, तृतीयपत्रम्—कठोपनिषद् इतिहाससमुच्चयः वाल्मीकीयरामायणे सुन्दरकाण्डस्य सीतारावणसंवादान्तो भागश्च।	१००
तृतीयवर्षे प्रथमपत्रम्—सामान्यनिरुक्तिर्गादाधरी।	१००
,, द्वितीयपत्रम्—तर्कमाथुरी, हरिदासीसहितः कुसुमाञ्जलिश्च।	१००
,, तृतीयपत्रम्—स्वविषयकेतिहासो व्युत्पत्तिप्रदर्शनं च।	१००

CC-0. Bhagavad Ramanuja National Research Institute, Melukote Collection.

Funding: Tattva Heritage Foundation,Kolkata. Digitization: eGangotri.

ग्रन्थाः अङ्काः

वेदान्तः

प्रथमवर्षे प्रथमपत्रम्—न्यायसिद्धान्तमुक्तावल्या अनुमानखण्डीया दिनकरी, भगवद्गीता शांकरभाष्यसहिता च। १००

प्रथमवर्षे द्वितीयपत्रम्—ब्रह्मसूत्रस्य प्रथमाध्यायः शांकरभाष्यसहितः। १००

,, तृतीयपत्रम्—वेदान्तपरिभाषा, पञ्चदश्या आदितः पञ्च प्रकरणानि च। १००

द्वितीयवर्षे प्रथमपत्रम्—ब्रह्मसूत्रस्य द्वितीयोऽध्यायः शांकरभास्यसहितः। न्यायकुसुमाञ्जलिः हरिदासीसहितश्च। १००

,, द्वितीयपत्रम्—छान्दोग्योपनिषदः षष्ठोध्यायः, बृहदारण्यकोपनिषदः आदितोऽध्यायत्रयंच शांकरभाष्यसहितम्। १००

,, तृतीयपत्रम्—न्यायवत्। १००

तृतीयवर्षे प्रथमपत्रम्—चतुःसूत्र्याः भामती (अत्र प्रकाशव्याख्याज्ञानमावश्यकम्)। ब्रह्मसूत्रस्य ३-४ अध्यायौ शांकरभाष्यसहितौ च। १००

,, द्वितीयपत्रम्—ब्रह्मसूत्रेषु प्रथमं सूत्रं श्रीभाष्यसहितम्। अधिकरणन्यायमाला बलावलाधिकरणान्ता च। १००

,, तृतीयपत्रम्—व्युत्पत्तिप्रदर्शनम्, स्वविषयकेतिहासश्च। १००

सांख्ययोगपुराणेतिहासाः

प्रथमवर्षे प्रथमपत्रम्—श्रीमद्भागवतस्यादितश्चतुःस्कन्धान्तो भागः। सांख्यतत्त्वकौमुदी च। १००

,, द्वितीयपत्रम्—न्यायमुक्तावली प्रत्यक्षखण्डान्ता, विज्ञानभिक्षुकृतः सांख्यसारो योगसारश्च। १००

,, तृतीयपत्रम्—सांख्यसूत्रम् अनिरुद्धवृत्तिसहितम्, तत्त्वसमाससूत्रम् सर्वोपकारिणीसहितं च। १००

द्वितीयवर्षे प्रथमपत्रम्—सांख्यसूत्रम् सभाष्यम्। वेदान्तसारश्च। १००

,, द्वितीयपत्रम्—श्रीमद्भागवतस्य ५–८ स्कन्धाः, दशमस्कन्धस्यपूर्वार्द्धम्। १००

,, तृतीयपत्रम्—न्यायवत्। १००

CC-0. Bhagavad Ramanuja National Research Institute, Melukote Collection.

Funding: Tattva Heritage Foundation,Kolkata. Digitization: eGangotri.

:ग्रन्था अङ्काः

तृतीयवर्षे प्रथमपत्रम्—वाचस्पत्यसहितम् योगसूत्रभाष्यम् द्वितीयपादान्तम्, भागवतदशमस्कन्धस्योत्तरार्धम्, देवीभागवतस्य षष्ठस्कन्धश्च । १००

तृतीयवर्षे द्वितीयपत्रम्—ब्रह्मसूत्रशांकरभाष्यस्य चतुःसूत्रीपर्यन्तो भागः, न्यायकुसुमाञ्जलिः हरिदासीसहितः, अर्थसंग्रहः, अवशिष्टं वाचस्पत्यसहितम् योगसूत्रभाष्यं च । १००

,, तृतीयपत्रम्—व्युत्पत्तिप्रदर्शनम्, स्वविषयकेतिहासश्च । १००

जैनबौद्धे

प्रथमवर्षे प्रथमपत्रम्—सर्वार्थसिद्धिः १, २, ५, १० अध्यायाः, प्रमाण-मीमांसा च । १००

,, द्वितीयपत्रम्—तर्कभाषा मोक्षाकरकृता । १००

,, तृतीयपत्रम्—विग्रहव्यावर्तिनी, बृहद्द्रव्यसंग्रहश्च । १००

द्वितीयवर्षे प्रथमपत्रम्—स्याद्वादमञ्जरी १००

,, द्वितीयपत्रम्—न्यायविन्दुः धर्मोत्तरप्रदीपसहितः । १००

,, तृतीयपत्रम्—न्यायवत् । १००

तृतीयवर्षे प्रथमपत्रम्—प्रमेयकमलमार्तण्डस्य प्रथमः परिच्छेदः, वेदान्त-परिभाषा च । १००

,, द्वितीयपत्रम्—तत्त्वसंग्रहे आत्मस्थिरभावातीन्द्रियदर्शिपुरुष-परीक्षाः । १००

,, तृतीयपत्रम्—स्वविषयकेतिहासो व्युत्पत्तिप्रदर्शनं च । १००

ज्यौतिषम्

प्रथमवर्षे प्रथमपत्रम्—सरलत्रिकोणमितिः, धरातलीयरेखागणितम्, रेखा-गणितम् ५, ६, अध्यायौ ६०+२०+२०= १००

,, द्वितीयपत्रम्—लीलावतीबीजोपपत्तिः (८०)
गोलीय रेखागणितम् (२०) १००

,, तृतीयपत्रम्—स्वविषयकेतिहासः । १००

CC-0. Bhagavad Ramanuja National Research Institute, Melukote Collection.

Funding: Tattva Heritage Foundation,Kolkata. Digitization: eGangotri.

ग्रन्थाः	अङ्काः
द्वितीयवर्षे प्रथमपत्रम्—सूर्यसिद्धान्तः (६०) मुहूर्त्तचिन्तामणिः संस्कारप्रकरणान्तः (४०)	१००
,, द्वितीयपत्रम्—सिद्धान्तशिरोमणौ गणिताध्यायः (६०) मुहूर्त्तचिन्तामणिः (अवशिष्टभागः) (४०)	१००
,, तृतीयपत्रम्—चतुर्वेदभाष्यभूमिकासंग्रहः ।	१००
तृतीयवर्षे प्रथमपत्रम्—सिद्धान्तशिरोमणौ गोलाध्यायः (७०) लघुपाराशरी (३०)	१००
,, द्वितीयपत्रम्—बृहज्जातकम् १०, १२ अध्यायौ (५०) ताजिकनीलकण्ठी १ तन्त्र पर्यन्ता (२५) चापीयत्रिकोणमिति- (२५)	१००
,, तृतीयपत्रम्—व्युत्पत्तिदर्शनम्	१००

आचार्य-परीक्षा

ऋग्वेदे

प्रथमवर्षे प्रथमपत्रम्—ऋग्वेदसंहितायाः सायणभाष्यसहितायाः चतुर्थाष्टकम् ।	१००
,, द्वितीयपत्रम्—निरुक्तम् १–६ अध्यायाः नीतिमंजरी च ।	१००
,, तृतीयपत्रम्—आश्वालायनश्रौतसूत्रस्य भाष्यसहितस्य ७—१२ अध्यायाः ऐतरेयारण्यके भाष्यसहिते प्रथमम् आरण्यकम्	१००
द्वितीयवर्षे प्रथमपत्रम्—ऋग्वेदसंहितायाः सायणभाष्यसहितायाः अष्टमाष्टकम्	१००
,, द्वितीयपत्रम्—सिद्धान्तकौमुद्यां स्वरवैदिकीप्रक्रिया ।	१००
द्वितीयवर्षे तृतीयपत्रम्—निरुक्तम् ७–१२ अध्यायाः, निरुस्तपरिशिष्टम् चरणव्यूहश्च	१००
तृतीयवर्षे प्रथमपत्रम्—ऐतरेयब्राह्मणस्य सायणभाष्यसहितस्य ५–८ पञ्चिकाः	१००

CC-0. Bhagavad Ramanuja National Research Institute, Melukote Collection.

Funding: Tattva Heritage Foundation,Kolkata. Digitization: eGangotri.

ग्रन्थाः	अङ्काः
तृतीयवर्षे द्वितीयपत्रम्—जैमिनीयन्यायमालाया आदितोऽध्यायत्रयम् ।	१००
,, तृतीयपत्रम्—स्वविषयकः आलोचनात्मको निबन्धः । (५०) ऐतरेयोपनिषद् सायणभाष्योपेता (५०)	१००

शुक्लयजुर्वेदे

प्रथमवर्षे प्रथमपत्रम्—शुक्लयजुर्वेदसंहितायाः महीधरभाष्यसहितायाः ३१–४० अध्यायाः ।	१००
,, द्वितीयपत्रम्—ऋग्वेदवत्	१००
,, तृतीयपत्रम्—कात्यायनश्रौतसूत्रस्य कर्काचार्यभाष्यसहितस्य ७–११ अध्यायाः	१००
द्वितीयवर्षे प्रथमपत्रम्—शतपथब्राह्मणस्य सायणभाष्यसहितस्य द्वितीय-तृतीयौ काण्डौ ।	१००
,, द्वितीयपत्रम्—सिद्धान्तकौमुद्यां स्वरवैदिकीप्रक्रिया ।	१००
,, तृतीयपत्रम्—ऋग्वेदवत्	१००
तृतीयवर्षे प्रथमपत्रम्—कात्यायनशुल्वसूत्रं महीधरभाष्यसहितम् शतपथ-ब्राह्मणस्य सायणभाष्यसहितस्य चतुर्थकाण्डम् ।	१००
,, द्वितीयपत्रम्—जैमिनीयन्यायमालाया आदितोऽध्यायत्रयम् ।	१००
,, तृतीयपत्रम्—स्वविषयकः आलोचनात्मको निबन्धः । (५०) बृहदारण्यकोपनिषद् वासुदेवब्रह्मभगवत् (५०) कृतभाष्योपेता ।	१००

कृष्णयजुर्वेदे

प्रथमवर्षे प्रथमपत्रम्—तैत्तरीयसंहितायाः सायणभाष्यसहितायाः द्वितीय-काण्डे ५–६ प्रश्नौ ।	१००
प्रथमवर्षे द्वितीयपत्रम्—ऋग्वेदवत्	१००
,, तृतीयपत्रम्—आपस्तम्बश्रौतसूत्रे ८–१३ प्रश्नाः ।	१००
द्वितीयवर्षे प्रथमपत्रम्—तैत्तिरीयब्राह्मणस्य सायणभाष्यसहितस्य तृतीय-काण्डे ७–९ प्रश्नाः	१००
,, द्वितीयपत्रम्—सिद्धान्तकौमुद्यां स्वरवैदिकीप्रक्रिया ।	१००
,, तृतीयपत्रम्—ऋग्वेदवत् ।	१००

CC-0. Bhagavad Ramanuja National Research Institute, Melukote Collection.

Funding: Tattva Heritage Foundation,Kolkata. Digitization: eGangotri.

ग्रन्थाः	अंकाः
तृतीयवर्षे प्रथमपत्रम्—तैत्तिरीयसंहितायाः सायणभाष्यसहितायाः चतुर्थ-काण्डे १–५ प्रश्नाः ।	१००
,, द्वितीयपत्रम्—जैमिनीयन्यायमालाया आदितोऽध्यायत्रयम् ।	१००
,, तृतीयपत्रम्—स्वविषयकः आलोचनात्मको निबन्धः । (५०) तैत्तिरीयोपनिषत् सायणभाष्यसहिता (५०)	१००

सामवेदे

प्रथमवर्षे प्रथमपत्रम्—सायणभाष्यसहितस्य उत्तरार्चिकस्य १३–२१ अध्यायाः ।	१००
प्रथमवर्षे द्वितीयपत्रम्—ऋग्वेदवत् ।	१००
,, तृतीयपत्रम्—लाट्यायनश्रौतसूत्रम् ६–१० प्रपाठकाः ।	१००
द्वितीयवर्षे प्रथमपत्रम्—ताण्ड्यमहाब्राह्मणस्य सायणभाष्यसहितस्य ६–१२ अध्यायाः ।	१००
,, द्वितीयपत्रम्—सिद्धान्तकौमुद्यां स्वरवैदिकीप्रक्रिया ।	१००
,, तृतीयपत्रम्—ऋग्वेदवत् ।	१००
तृतीयवर्षे प्रथमपत्रम्—षड्विंशब्राह्मणं सायणीयभाष्यसहितम् ।	१००
,, द्वितीयपत्रम्—जैमिनीयन्यायमालायाः आदितोऽध्यायत्रयम् ।	१००
,, तृतीयपत्रम्—स्वविषयकः आलोचनात्मको निबन्धः । (५०) छान्दोग्योपनिषत् मिताक्षरासहिता (५०)	१००

मीमांसायाम्

प्रथमवर्षे प्रथमपत्रम्—श्लोकवार्तिकम् अभावनिरूपणान्तम् ।	१००
,, द्वितीयपत्रम्—प्रकरणपञ्चिका प्रमाणपारायणान्ता	१००
,, तृतीयपत्रम्—बृहत्यास्तर्कपादः	१००
द्वितीयवर्षे प्रथमपत्रम्—तन्त्रवार्तिके प्रथमाध्यायः ।	१००
,, द्वितीयपत्रम्—विधिविवेकः	१००
,, तृतीयपत्रम्—न्यायरत्नमाला	१००

CC-0. Bhagavad Ramanuja National Research Institute, Melukote Collection.

Funding: Tattva Heritage Foundation,Kolkata. Digitization: eGangotri.

ग्रन्थाः	अङ्काः
तृतीयवर्षे प्रथमपत्रम्—मीमांसाकौस्तुभे प्रथमोध्यायः	१००
,, द्वितीयपत्रम्—भाट्टरहस्यम् द्वितीया कारकान्तम्, तत्वविन्दुश्च ।	१००
,, तृतीयपत्रम्—स्वविषयकः आलोचनात्मको निबंधः	१००

धर्मशास्त्रे

प्रथमवर्षे प्रथमपत्रम्—पराशरमाधवस्य आचाराध्यायः	१००
,, द्वितीयपत्रम्—दायभागः (जीमूतवाहनस्य) दत्तकमीमांसा च ।	१००
,, तृतीयपत्रम्—मिताक्षराया व्यवहाराध्यायः प्रायश्चित्तविवेकश्च (शूलपाणेः)	१००
द्वितीयवर्षे प्रथमपत्रम्—कालमाधवः शुद्धिविवेकश्च	१००
,, द्वितीयपत्रम्—व्यवहारमयूखः जैमिनीयन्यायमालायाः आदितोऽध्यायत्रयञ्च ।	१००
,, तृतीयपत्रम्—अर्थशास्त्रम् कौटिलीयम् ३–४–५ अधिकरणानि	१००
तृतीयवर्षे प्रथमपत्रम्—शारदातिलकस्य गायत्रीनिरूपणान्तो भागः ।	१००
,, द्वितीयपत्रम्—शुक्रनीतिसारः, नीतिमयूखश्च	१००
,, तृतीयपत्रम्—स्वविषयकः आलोचनात्मको निबन्धः (२५) व्यवस्थालेखनम् (२५) धर्मशास्त्रोपयोगिप्रमाणप्रमेयज्ञानसम्पादनम् (५०)	१००

अत्र सहायकग्रन्था :—

(क) आर्यविद्यासुधाकरः
(ख) सरस्वती विलासः
(ग) कालमाधवः
(घ) द्वैतनिर्णयः
(ङ) हिस्ट्री आफ् धर्मशास्त्र प्रो० काणे

व्याकरणे

प्रथमवर्षे प्रथमपत्रम्—नवाह्निकभाष्यम् ।	१००
,, द्वितीयपत्रम्—प्रथमाध्यायत्रिपादीभाष्यम् ।	१००
,, तृतीयपत्रम्—व्युत्पित्तिवादः प्रथमाकारकान्तः ।	१००

CC-0. Bhagavad Ramanuja National Research Institute, Melukote Collection.

Funding: Tattva Heritage Foundation,Kolkata. Digitization: eGangotri.

ग्रन्थाः	अङ्काः
द्वितीयवर्षे प्रथमपत्रम्—द्वितीयाध्यायभाष्यम् ।	१००
,, द्वितीयपत्रम्—तृतीयाध्यायभाष्यम् चतुर्थाध्यायप्रथमपादस्या-	१००
ह्निकत्रयभाष्यञ्च ।	१००
,, तृतीयपत्रम्—शक्तिवादः तच्छब्दान्तः (७५)	
ब्रह्मकाण्डं वाक्यपदीयस्य (२५)	१००
तृतीयवर्षे प्रथमपत्रम्—अङ्गाधिकारभाष्यम् ।	१००
,, द्वितीयपत्रम्—अष्टमाध्यायभाष्यम् ।	१००
,, तृतीयपत्रम्—लघुमञ्जूषायाः स्फोटनिरूपणान्तो भागः ।	१००

साहित्ये

प्रथमवर्षे प्रथमपत्रम्—रसगङ्गाधरः उपमालंकारात्पूर्वभागः ।	१००
,, द्वितीयपत्रम्—चम्पूभारतम् ।	१००
,, तृतीयपत्रम्—वेदान्तपरिभाषा ।	१००
द्वितीयवर्षे प्रथमपत्रम्—रसगङ्गाधरः उपमामारभ्य व्यतिरेकान्तः ।	१००
,, द्वितीयपत्रम्—ध्वन्यालोकः ।	१००
,, तृतीयपत्रम्—स्तुतिकुसुमाञ्जलिः ।	१००
तृतीयवर्षे प्रथमपत्रम्—अवशिष्टो रसगङ्गाधरः ।	१००
,, द्वितीयपत्रम्—व्यक्तिविवेकः ।	१००
,, तृतीयपत्रम्—वासवदत्ता (५०)	
गद्यनिबन्धः (२५)	
पद्यनिर्माणम् (२५)	१००

न्यायवैशेषिकयोः

प्रथमवर्षे प्रथमपत्रम्—अवयवः प्रतिज्ञालक्षणान्तः गादाधरीसहितः, केवलान्व-	
यिजागदीशी च ।	१००
,, द्वितीयपत्रम्—शब्दशक्तिप्रकाशिका नामप्रकरणान्ता, सामान्य-	
लक्षणा आचार्यमतखण्डनान्ता च ।	१००
,, तृतीयपत्रम्—प्रामाण्यवादः प्रथमविप्रतिपत्तिपर्यन्तः ।	१००

CC-0. Bhagavad Ramanuja National Research Institute, Melukote Collection.

Funding: Tattva Heritage Foundation,Kolkata. Digitization: eGangotri.

ग्रन्थाः	अङ्काः
द्वितीयवर्षे प्रथमपत्रम्—वात्स्यायनभाष्यम् चतुर्थाध्यायरहितम्, व्युत्पत्तिवादः प्रथमाकारकान्तश्च ।	१००
,, द्वितीयपत्रम्—अनुमितिगादाधरी स्मृत्यन्ता, शक्तिवादः सामान्यकाण्डान्तश्च ।	१००
,, तृतीयपत्रम्—आत्मतत्त्वविवेकः क्षणभङ्गभङ्गान्तः ।	१००
तृतीयवर्षे प्रथमपत्रम्—प्रशस्तपादभाष्यं किरणावलीसहितम्द्रव्यनिरूपणान्तम्	१००
,, द्वितीयपत्रम्—सव्यभिचारः सत्प्रतिपक्षश्च (गदाधरी)	१००
,, तृतीयपत्रम्—स्वविषयक आलोचनात्मको निबन्धः ।	१००

वेदान्ते

प्रथमवर्षे प्रथमपत्रम्—खण्डनखण्डखाद्यस्य प्रथमः परिच्छेदः प्रमाणसामान्यलक्षणखण्डनान्तः ।	१००
,, द्वितीयपत्रम्—विवरणप्रमेयसंग्रहस्य प्रथमवर्णकम्	१००
,, तृतीयपत्रम्—ब्रह्मसिद्धिः तर्ककाण्डान्ता ।	१००
द्वितीयवर्षे प्रथमपत्रम्—चित्सुखी प्रथमपरिच्छेदान्ता ।	१००
,, द्वितीयपत्रम्—सिद्धान्तलेशसंग्रहः ।	१००
,, तृतीयपत्रम्—न्यायबिन्दुः द्वितीयपरिच्छेदान्तः, प्रत्यभिज्ञाविमर्शिन्याः ज्ञानकाण्डो वा । आत्मतत्त्वविवेकश्च क्षणभङ्गभङ्गान्तः, व्युत्पत्तिवादः प्रथमाकारकान्तो वा ।	१००
तृतीयवर्षे प्रथमपत्रम्—अद्वैतसिद्धिरागमबाधोद्धारान्ता ।	१००
,, द्वितीयपत्रम्—लघुचन्द्रिका मिथ्यात्वमिथ्यात्वान्ता, अद्वैतरत्नरक्षणम् वा ।	१००
,, तृतीयपत्रम्—स्वविषयक आलोचनात्मको निबन्धः ।	१००

सांख्ययोगपुराणेतिहासेषु

प्रथमवर्षे प्रथमपत्रम्—योगसूत्रेषु भाष्यम्, योगवार्तिकञ्च ।	१००
,, द्वितीयपत्रम्—योगवाशिष्ठस्योत्पत्तिप्रकरणम् ।	१००
,, तृतीयपत्रम्—वाल्मीकीयरामायणस्य बालकाण्डः सुन्दरकाण्डश्च ।	१००

CC-0. Bhagavad Ramanuja National Research Institute, Melukote Collection.

Funding: Tattva Heritage Foundation,Kolkata. Digitization: eGangotri.

ग्रन्थाः	अङ्काः
द्वितीयवर्षे प्रथमपत्रम्—मधुसूदनीसहितगीताया आदितः षडध्यायाः, शिवपुराणस्य वायवीयसंहिता च ।	१००
,, द्वितीयपत्रम्—सर्वदर्शनसंग्रहे चार्वाकबौद्धार्हतदर्शनानि, भक्तिरसायनस्य प्रथमो भागः प्रस्थानभेदश्च ।	१००
,, तृतीयपत्रम्—क्षेमानन्दकृतं सांख्यतत्त्वविवेचनम् । श्रीमद्भागवतस्य एकादशः स्कन्धश्च ।	१००
तृतीयवर्षे प्रथमपत्रम्—वेदान्तसूत्रं विज्ञानामृतभाष्यसहितं, चतुःसूत्रीं विहाय शांकरभाष्यसहितं, च प्रथमाध्यायस्य प्रथमपादान्तम् । श्वेताश्वतरोपनिषद् शांकरभाष्यसहिता, बृहदारण्यकोपनिषदः शांकरभाष्ये सत्कार्यवादश्च ।	१००
तृतीयवर्षे द्वितीयपत्रम्—महाभारते शान्तिपर्वणि मोक्षधर्मप्रकरणम्, उद्योगपर्वणि च आदितः पंचाशदध्यायाः ।	१००
,, तृतीयपत्रम्—स्वविषयकः आलोचनात्मको निबन्धः ।	१००

जैनदर्शने

प्रथमवर्षे प्रथमपत्रम्—विशेषावश्यकभाष्ये गणधरवादः	१००
,, द्वितीयपत्रम्—शास्त्रवार्तासमुच्चयः स्वोपज्ञटीकासहितः ।	१००
,, तृतीयपत्रम्—सन्मतितर्कः मूलमात्रम् ।	१००
द्वितीयवर्षे प्रथमपत्रम्—न्यायकुमुदचन्द्रे पृ० ६०५–८०८	१००
,, द्वितीयपत्रम्—राजवार्तिकम्–अ० १, २, ५ ।	१००
,, तृतीयपत्रम्—लोकप्रकाशे सर्ग ३ श्लो० ११३०–१३०३, हरिभद्रकृतो योगदृष्टिसमुच्चयश्च ।	१००
तृतीयवर्षे प्रथमपत्रम्—अष्टसाहस्री (पूर्वार्धम्) ।	१००
,, द्वितीयपत्रम्—अष्टसाहस्री (उत्तरार्धम्)	१००
,, तृतीयपत्रम्—स्वविषयकः आलोचनात्मको निबन्ध ।	१००

बौद्धदर्शने

प्रथमवर्षे प्रथमपत्रम्—तत्त्वसंग्रहे प्रत्यक्षानुमानबहिरर्थपरीक्षाः ।	१००
,, द्वितीयपत्रम्—वादन्यायः सटीकः ।	१००
,, तृतीयपत्रम्—हेतुबिन्दुः (अर्चटटीकासहितः)	१००

CC-0. Bhagavad Ramanuja National Research Institute, Melukote Collection.

Funding: Tattva Heritage Foundation,Kolkata. Digitization: eGangotri.

ग्रन्थाः	अङ्काः
द्वितीयवर्षे प्रथमपत्रम्—प्रमाणवार्त्तिके प्रथम-द्वितीयपरिच्छेदौ मनोरथ-नन्दिटीकासहितौ ।	१००
,, द्वितीयपत्रम्—प्रमाणवार्तिके तृतीय-चतुर्थपरिच्छेदौ मनोरथ-नन्दिटीकासहितौ ।	१००
,, तृतीयपत्रम्—श्रामण्यफलसूत्रम्, चुल्लमालुक्यसूत्रञ्च ।	१००
तृतीयवर्षे प्रथमपत्रम्—प्रमाणवार्तिकभाष्यम् प्रत्यक्षपरिच्छेदान्तम् ।	१००
,, द्वितीयपत्रम्—मिलिन्दप्रश्नः ।	१००
,, तृतीयपत्रम्—स्वविषयकः आलोचनात्मको निबन्धः ।	१००

ज्यौतिषे गणिते

प्रथमवर्षे प्रथमपत्रम्—सिद्धान्ततत्वविवेकः त्रिप्रश्नान्तः ।	१००
,, द्वितीयपत्रम्—वास्तवचन्द्रशृङ्गोन्नतिः, भाभ्रमरेखानिरूपणम्, परिवलयक्षेत्रम् ।	१००
,, तृतीयपत्रम्—केतकी ।	१००
द्वितीयवर्षे प्रथमपत्रम्—सिद्धान्ततत्वविवेकः उत्तरार्धः ।	१००
,, द्वितीयपत्रम्—ग्रहलाघवोपपत्तिः सूर्यग्रहणान्ता ।	१००
,, तृतीयपत्रम्—मकरन्दसारिणी, (सारणीमेनामुदाहरणरहितां परीक्षास्थले नेतुमर्हति) षट्पञ्चाशिका च ।	१००
तृतीयवर्षे प्रथमपत्रम्—पञ्चसिद्धान्तिका ।	१००
,, द्वितीयपत्रम्—दीर्घवृत्तपूर्वार्धम् प्रतिभाबोधकम् ।	१००
,, तृतीयपत्रम्—चलनकलन ४ अध्यायाः, धराभ्रमः ।	१००

ज्यौतिषे फलिते

प्रथमवर्षे प्रथमपत्रम्—जातकपारिजातः ।	१००
,, द्वितीयपत्रम्—सरावली	१००
,, तृतीयपत्रम्—बृहत्पाराशरहोरा ।	१००

CC-0. Bhagavad Ramanuja National Research Institute, Melukote Collection.

Funding: Tattva Heritage Foundation,Kolkata. Digitization: eGangotri.

ग्रन्थाः	अङ्काः
द्वितीयवर्षे प्रथमपत्रम्—नरपतिजयचर्या ।	१००
,, द्वितीयपत्रम्—केशवीयजातकपद्धतिः वृहद्वास्तुमाला ।	१००
,, तृतीयपत्रम्—जैमिनीसूत्रम्, हस्तरेखाज्ञानम् (हस्तसंजीवनीतः)	१००
तृतीयवर्षे प्रथमपत्रम्—वृहत्संहितोत्तरार्धस्य वास्तुविद्या–दकार्गल–वृक्षायुर्वेद–प्रासादस्वरूप–वज्रलेप–पुरुषलक्षण–कन्यालक्षण–शाकुन शाकुनोत्तर ग्रहगोचराध्याः ।	१००
,, द्वितीयपत्रम्—हायनरत्नम् ।	१००
,, तृतीयपत्रम्—भावकुतूहलम् जातकक्रोडश्च ।	१००

पौरोहित्यरत्नपरीक्षायाम्

शुक्लयजुर्वेदे

प्रथमवर्षे प्रथमपत्रम्—रुद्राष्टाध्यायी, मन्त्रसंहिता ग्रहशान्तिश्च	१००
,, द्वितीयपत्रम्—फलितसंग्रहः कुण्डसिद्धिः, आचारादर्शस्य तर्पणान्तोभागः	१००
,, तृतीयपत्रम्—महारुद्रपद्धतिः	१००
द्वितीयवर्षे प्रथमपत्रम्—संस्कारभास्करीया षोडशसंस्कारपद्धतिः	१००
,, द्वितीयपत्रम्—मन्त्रार्थदीपिका	१००
,, तृतीयपत्रम्—श्राद्धविवेकः शुद्धिविवेकश्च	१००
तृतीयवर्षे प्रथमपत्रम्—प्रतिष्ठामयूखः, प्रदीपत्रयं च	१००
,, द्वितीयपत्रम्—धर्मसिन्धोः संस्कारप्रकरणम् मुहूर्तचिन्तामणेः परिभाषा-विवाह-संस्कारप्रकरणानि ।	१००
,, तृतीयपत्रम्—पारस्करगृह्यसूत्रम् ।	१००

पौरोहित्यरत्नपरीक्षायाम्

कृष्णयजुर्वेदे

प्रथमवर्षे प्रथमपत्रम्—महन्न्यास सूक्तानि, श्रीरुद्रम्–चमकम्	१००
,, द्वितीयपत्रम्—शुक्लयजुर्वेदवत् ।	१००

CC-0. Bhagavad Ramanuja National Research Institute, Melukote Collection.

Funding: Tattva Heritage Foundation,Kolkata. Digitization: eGangotri.

ग्रन्थाः	अङ्काः
प्रथमवर्षे तृतीयपत्रम्—महारुद्रपद्धतिः (कर्मविपाकोक्ता) उपाकर्मपद्धतिः ग्रहशान्तिपद्धतिश्च	१००
द्वितीयवर्षे प्रथमपत्रम्—षोडशसंस्कारपद्धतिः (कृष्णयजुर्वेदीया)	१००
,, द्वितीयपत्रम्—याजुषमन्त्ररत्नाकरः एकाग्नि काण्डभाष्यम् अथवा मन्त्रार्थ दीपिका	१००
,, तृतीयपत्रम्—श्राद्धप्रयोगः, स्मृतिमुक्ताफलस्याशौचकाण्डम्	१००
तृतीयवर्षे प्रथमपत्रम्—शु० यजुर्वेदवत्	१००
,, द्वितीयपत्रम्—शु० यजुर्वेदवत्	१००
,, तृतीयपत्रम्—आपस्तम्बगृह्यसूत्रम् अनाकुलातात्पर्यदर्शनोपेतम्	१००

कर्मकाण्डशास्त्रिपरीक्षायाम्

शुक्लयजुर्वेदे

पथमवर्षे प्रथमपत्रम्—शुक्लयजुर्वेदसंहितायाः १–८ अध्यायाः (मूलमात्रम्) (५०) १–८ अध्यायाः महीधरभाष्यं च (५०)	१००
,, द्वितीयंपत्रम्—कात्यायनश्रौतसूत्रम् कर्कभाष्यसहितम् १-५ अध्यायाः श्रौतसूत्रभूमिका च म. म. पं. विद्याधर गौड़कृता	१००
,, तृतीयपत्रम्—याज्ञवल्क्यस्मृतेः आचाराध्यायः अर्थसंग्रहश्च	१००
द्वितीयवर्षे प्रथमपत्रम्—शुक्लयजुर्वेदसंहितायाः ९–१४ अध्यायाः (मूलमात्रम्) (५०) ९–१४ अध्यायाः महीधरभाष्यं च (५०)	१००
,, द्वितीयपत्रम्—शुक्लयजुः प्रातिशाख्यम् पिङ्गलच्छन्दसि वैदिक-प्रकरणम्, याज्ञवल्क्यशिक्षा च	१००
,, तृतीयपत्रम्—निरूक्ते १–३ अध्यायाः, निरुक्तालोचनञ्च	१००
तृतीयवर्षे प्रथमपत्रम्—शुक्लयजुर्वेदसहितायाः १५–२० अध्यायाः (मूलमात्रम्) (५०) १५–२० अध्यायाः महीधरभाष्यं च (५०)	१००

CC-0. Bhagavad Ramanuja National Research Institute, Melukote Collection.

Funding: Tattva Heritage Foundation,Kolkata. Digitization: eGangotri.

ग्रन्था	अङ्काः
तृतीयवर्षे द्वितीयपत्रम्—शतपथब्राह्मणस्य प्रथमकाण्डम् चरणव्यूहश्च	१००
,, तृतीयपत्रम्—भाष्यभूमिकासंग्रहः सक्रियशिक्षापरीक्षा च	१००
कृष्णयजुर्वेदे	
प्रथमवर्षे प्रथमपत्रम्—तैत्तिरीय संहितायाः प्रथमकाण्डे आद्यं प्रपाठक द्वयम्। (५०) उपनयनान्तः पूर्वप्रयोगः, (५०)	१००
,, द्वितीयपत्रम्—आपस्तम्बश्रौतसूत्रम् (धूर्तस्वामिभाष्यसहितम्) आदितः पंचप्रश्नाः	१००
,, तृतीयपत्रम्—शुक्लयजुर्वेदवत्।	१००
द्वितीयवर्षे प्रथमपत्रम्—तैत्तिरीयसंहितायाः प्रथमकाण्डे ३–५ प्रपाठकः (५०) आपस्तम्बीयः अपरप्रयोगः सायणभाष्यं सहितं च। (५०)	१००
,, द्वितीयपत्रम्—तैत्तिरीयप्रातिशाख्यम् पिङ्गलच्छन्दसि वैदिक-प्रकरणम्। पाणिनिशिक्षा च।	१००
,, तृतीयपत्रम्—शुक्लयजुर्वेदवत्।	१००
तृतीयवर्षे प्रथमपत्रम्—तैत्तिरीयसंहितायाश्चतुर्थकांण्डस्यादितश्चत्वारः प्रपाठकाः। (५०) स्मृतिमुक्ताफलस्य श्राद्धकाण्डम्। (५०)	१००
,, द्वितीयपत्रम्—तैत्तिरीयब्राह्मणस्य प्रथमकाण्डस्य आदितश्चत्वारः प्रपाठकाः सायणभाष्यं च। (५०)	५०
,, तृतीयपत्रम्—शुक्लयजुर्वेदवत्।	१००

CC-0. Bhagavad Ramanuja National Research Institute, Melukote Collection.

Funding: Tattva Heritage Foundation,Kolkata. Digitization: eGangotri.

CC-0. Bhagavad Ramanuja National Research Institute, Melukote Collection.

Funding: Tattva Heritage Foundation,Kolkata. Digitization: eGangotri.

CC-0. Bhagavad Ramanuja National Research Institute, Melukote Collection.

Funding: Tattva Heritage Foundation,Kolkata. Digitization: eGangotri.

मुद्रक—लक्ष्मी दास
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय यंत्रालय, वाराणसी–५

CC-0. Bhagavad Ramanuja National Research Institute, Melukote Collection.